रिकार्ड -भोला नाथ से निराला.... ओम शान्ति अध्ययय प्रातः क्लास 29-6-67

रूहानीन बच्चे-तो यह जान चुके है कि ऊँच ते ऊँच भगवान है। मनुष्य गाते है और तुम उनको देखते हो दिव्य दृष्टी से। तुम बुधी से भी जानते हो कि वो हमको पढा रहे है। आत्मा ही पढाती है शरीर से। सब कुछ आत्मा ही करती है शरीर से। शरीर बिनाशी है। जिसकी आत्मा धारन कर पार्ट बजाती है। अब आत्मा मे ही पुरा पार्ट भरा हुआ है।84जन्मो की भी आत्मा मे ही नूंध है।आत्मा अविनाशी है। पहले-2 तो अपने को आत्मा समझना है। बाप है सर्वशक्तिवान। उनसे तुम बच्चो को शक्ति मिलती है। योग से शक्ति जाती मिलती है जिससे ही तुम पावन बनते हो।(बाप तुमको शक्ति देते है विश्व पर राज्य करने की। इतनी शक्ति महान देते है।)वो साईंस घमन्डी इतना सब बनाते रहते है विनाश करने के लिये। (उनकी बुधी है विनाश के लिये। तुम्हारी बुधी है अविनाशी पद पाने लिये।) तुमको बहुत शक्ति मिलती है जिसेस ही तुमविश्व का स्वराज्य पाते हो।वहां प्रजा का प्रजा पर राज्य नही होता। वहां है ही राजा रानी का राज्य। ऊँच ते ऊँच है भगवान।याद भी उनको ही करते है।लन्न का तो सिर्फ मन्दिर बना कर पुजते है। फिर भी उंच ते ऊँच भगवान गाया जाता है। अब तुम समझते हो कि यह लन्न भी विश्व का मालिक थे। ऊँच ते ऊँच विश्व की बादशाही मिलती है। बेहद के बाप से तुमको कितना ऊँच पद मिलता है। तुम बच्चो को कितनी खुशी होनी चाहिये। जिससे कुछ मिलता है उनको याद तो किया जाता है नाँ। कन्या को पति से क्या मिलता है? क्या माँ-बाप से खान-पान जेवर आद नही मिल सकता है? पति से सिर्फ मिलता ही है जहर।कितने पति के पिछाडी तो प्राण देती है। कितना लव रहता है। और देता क्या है?जहर। यह तो पतियों का पति तुम को कितना श्रृंगार रहे है तुमको राजाई का ऊँच पद देने लिये। तो तुम बच्चो मे कितना नशा होना चाहिये। दैवी गुण भी तुमको यहाँ पर ही धारन करने है। बहुतो मे आसुरी गुण है लडना झगडना,रूसना, सेन्टर्स पर हमचक्र मचाना। बाबा जानते है कि बहुत ही डिससर्विस करने वाले तो अभी भी यहा बैठ हुये है। बहुतरिपोर्टस आती है।काम शत्रु है तो कोई क्रोध भी कम शत्रु नही है। पहलाने पर प्यार है तो मेरे पर क्यो नही।पहलानी बात उनसे पूछती है तो मेरे से क्यो नही पूछती, ऐसे-2 बोलने वाले धुन्धकारी भी है। राजधानी स्थापन होती है नाँ। ऐसे-2 लोग तो क्या पद पावेंगे। मर्तबे मे तो फर्क रहता है नाँ। मेहतर भी कोई तो देखो तो अच्छे-2 महलो मे रहते है तो कोई कहाँ रहते है। हर एक को अपना पुरूषार्थ करके दैवी गुण तो बहुत अच्छे-2 धारन करने है। देहअभिमान मे आने पर आसुरी ऐक्टविटीज होती है। जब देही-अभिमानी बन कर अच्छी रीती धारन करते रहे तो ऊँच पद पावें। पुरूषार्थ ऐसे करना है दैवी गुण धारन करने का। किनको भी दुःख नही देना है। तुम बच्चे दुःखहर्ता सुख कर्ता बाप के बच्चे हो। कोई को भी दुःख नाँ देना चाहिये। ब्राहमणी जो सेन्टर सम्भालती है उस पर तो बहुत जिम्मेवारी है। जैसे बाप कहते है नाँ के बच्चे कोई भी भूल होती है तो सौ गुणा दण्ड पर जाता है। ब्राहमणी पर तो फिर हजार गुणा दण्ड पड जाता है।देहअभिमानहोने से बहुत घाटा पड जाता है। जबकि तुम ब्राहमण सुधारने लिये निमन बने हुये हो। अगर खुद ही नही सुधरे तो औरों को क्या सुधारेंगे। बहुत नुकसानहो जाता है। पाण्डव गवर्मेन्ट है नाँ। ऊँच ते ऊँच बाप है उनके साथ धर्मराज भी है। धर्मराज दवारा बहुत सजा खाते है। ब्राहमणी बन कर अगर खुद ऐसे कर्म करती है तो बहुत घाटा पडजाता है। हिसाब ही हिसाब है। बाबा के पास पुरा हिसाब रहता है। भक्ति मार्ग मे भी हिसाब ही हिसाब है। कहते भी है कि अब तो भगवान ही तुम्हारा हिसाब लेंगे। यहाँ बाप खुद कह रहे है धर्म राज बहुत हिसाब लेगा। फिर उस समय क्या कर सकेंगे। डण्डा खावेंगे। सा0 होगा। हमने यह-2 किया। वहाँ तोयहाँ जेल मे तो थोडी मार पडती है। वहाँ तो बहुत मार खानी पडेगी। ताम्रध्वज मोरध्वज की कथा भी सुनाई है। इस समय के साथ ही उस कथा का कनैक्शन है। तुम बच्चो को सतयुग मे गर्भ जेल मे आना नही है। वहाँ है गर्भ महल। कोई पाप आद करते नही है। राजभाग पाने लिये कर्मो की बहुत

खबरदार होना है। ब्राह्मणी की कहीं भी बेकायदे चलन देखो तो झट बाबा को लिखना चाहिये। बाबा शिक्षा देंगे तो समझेंगी कि मै नुकसान करती हूं। बहुतों को डिस्टर्ब कर देते है। ऐसे-2 भी बच्चे है। बाबा बताते है कई बच्चें ब्राह्मणी से भी सदबार अच्छे हो जाते है। तकदीर ब्राह्मणी से भी अच्छी हो जाती है। यह भी बाबा ने समझाया है जन्मजन्मान्तर दास-दासियों के बनने से तो प्रजा मेही अच्छा पद पाना चाहिये नां। समझ लेवें कि हम ब्राह्मणी होकर अच्छी सर्विस नही करेंगी तो जन्मजन्मान्तरदास-दासरी बनूगी। ऐसे नही कि यहां पर ब्राह्मणी का राज्य रखा है। अगर सर्विस नही करती है तो बहुत दुर्गति होती है। तुम बच्चो को देहीअभिमानी बनना है। इसलिये ही बाबा यहां आने पर ही कहते है अपने को आत्मा समझ कर बैठे हो? बाप की बच्चो प्रति महावाक्य है कि बच्चो आत्मअभिमानी बनने का बहुत पुरुषार्थ करना है। घूमते फिरते भी विचार सागर मथन करते रहना है। बहुत बच्चे है जो तो समझते है कि कहीं जल्दी-2 इस नर्क से छी-2 दुनियां से जांव सुखधाम। बाप कहते है अच्छे-2 महारथी भी योग मे बहुत फेल है। उनको भी ताकीद की जाती है योग नही अगर होता तो एकदम गिर पडेंगे। नालेज तो बहुत सहज है। मिट्ठी लगाकर सारी बुद्धी मे आ जाती है। बहुत अच्छी-2 बच्चियां जो है प्रदर्शनी समझाने मे बडी तीखी है। परन्तु योग तो है ही नही। दैवी गुण ही नही है। कब-2 खयाल होता है अभी तो देखो क्या अवस्थाये है बच्चो की। दुनियां मे कितना दुःख है। जल्दी ही यह पुरानी दुनियां खत्म हो जावे बात पकड बैठे है कि जल्दी ही चले सुखधाम मे। तडफते रहते है। जैसे बाप से मिलने लिये तडफते है, क्योंकि बाबा हमको स्वर्ग का रास्ता बताते है। ऐसे बाप को देखने लिये तडफते है। समझते है कि ऐसे बाप के सम्मुख रोज देखे। सुने। अब यह तो समझते है कि यहां पर कोई झंझट की बात नही रहती। बाहर मे रहने परन्तु सबसे ही तोड निभानी पडती है। मैही तो खिटपिट हो जावे। इसलिये ही यबको धैर्य दे देते है। गवर्मेन्ट किनको भी उडाने देती नही करती। शास्त्रो मे भी है कि कृष्ण को भी जेल मे डाल दिया। क्योंकि पतितों को पावन बनाते है। पुरानी गवर्मेन्ट है नां। इसलिये ही बहुत सम्भाल से चलना होता है। बडी युक्ति से राजधानी स्थापन करनी है। रावण राज्य मे तो बहुत युक्ति चाहिये। इसमे बडी गुप्त मेहनत है। याद की मेहनत। कोई से भी पहुचती नही है। गुप्त यादमे रेह तो बाप के डायरेक्शन परले भी चले। देहअभिमान कारन बाप के डायरेक्शन पर चलते ही नही है। कहता हूं चार्ट बनाओ तो बहुत तरक्की होगी। यह किसने कहा? शिव बाबा ने। टीचर काम देते है तो करके आते है नां। यहां अच्छे-2 बच्चे को भी माया करने नही देती है। अच्छे-2 बच्चो को अगर चार्ट बाबा पास आवे तो बाबा बतावे। देखो कैसे-2 याद मे रहते है। समझते है कि हम आत्मायें आशिक है। एक माशूक की। बाप कहते है वो जिस्मानी आशुक माशूक तो अनेक प्रकार के होते है। तुम बहुत पुराने आशिक हो। अभी तो तुमको देही अभिमानी बनना है। कुछ नां कुछ सहन भी करना ही पडेगा। मियां मिठू नही बनना है। बाबा ऐसे थोडेई कहते है कि हडी दे दो। बाबा तो कहते है सेहत अच्छी रखो तो सर्विस भी कर सकेंगी। बिमार होगें तो पडे ही रहेंगे। कोई हास्पिटल मे भी समझाने की कोशिश करते है। तो डाक्टर लोग कहते है कि यह तो पक्षियाँ है। चित्र साथ मे ले जाते है। जो ऐसे-2 सर्विस करते है उनको रहम दिल कहेंगे। सर्विस करते है तो कोई नां कोई निकल पडते है। जितना-2 याद बल मे रहेंगे उतना मनुष्यों को तुम खीचेंगे। इसमे ही ताकत है। प्योरटी फर्स्ट। कहा भी जाता है पहले प्योरटी पीस फिर बाद मे पर्सपरेटी। याद के बल से ही तुम प्योअर होते है। फिर है ज्ञान बल। याद मे कमजोर मत बनो। याद मे ही विघ्न पडेंगे। याद मे रहने परही पवित्र भी बनेंगे। और दैवी गुण भी आवेंगे। बाप की महिमा तो जानते हो नां। बाप कितना सुख देते है। 21जन्म लिये। तुमको सुख का लायक बनाते है। कब भी किनको दुःख नही देना चाहिये। छिन्दर्स पर भी देहअभिमान मे आकर बहुत धमचक मचा देते है।

डिससर्विस करते है। बाप कहेंगे यह बहुतनों करते है। कि= कपूत बच्चे है। इसमे श्राप की बात नही। श्राप तो वो अपने को आप ही देते है। डिससर्विस करके एकदम पट पडजाते है। बहुत बच्चे है जो विकार मे गिर पडते है वा क्रोध मे आकर पढाई छोड देते है अनेक प्रकार के बच्चे यही बैठे है। यहाँ से रिफ्रेश होकर जाते है तो भूल कर पश्चाताप करते है। फिर भी पश्चाताप से कोई माफ नही हो सकता। बाप कहते के क्षमा अपने पर आप ही करो। याद मे रहो। बाप किसको भी क्षमा नही करते। वो कसाधु लोग आद बहुत गपपौडे मारते है। बाबा पढ से कहते है कि यह तो पढाई है। बाप पढाते है। बच्चो को अपने पर कृपा करके पढना है। मैनर्स अच्छे रखने है। बाबा ब्राह्मणी को कहते है रजिस्टर भी लेकर आओ। एक-2 का समाचार सुनाओ। समझानी दी जाती है। ऐसे-2 तुम डिससर्विस करते हो। वो समझते है कि ब्राह्मणी ने रिपोर्ट दी है। और वे जास्ती करने लग जाते है। बडी मेहनत लगती है। माया बडी दुश्मन है। कदम से मन्दिर बनने ही नही देती है। बन्दर के बन्दर ही रह जाते है। ऊंच पद पाने बदली बिलकुल ही नीचे गिर जाते है। फिर कब उठ नही सकते। मर जाते है। बाप बच्चो को बार-2 समझाते है कि यह बडी ऊंची मंजिल है। विश्व का मालिक बनना है। बडे आदमी के बच्चे तो बहुत रायल्टी से चलते है कि कही बाप की इज्जत नही जावें। कहेंगे तुम्हारा बाप कितना अच्छा है। तुम कितने कपूत हो। तुम अपने बाप की इज्जत गवां रहे हो। यहाँ तो हर एक अपनी ही इज्जत गवाते है। बहुत सजाये खानी पडती है। विकर्म करते है तो बहुत बडी सजायें खा-2 कर फिर भी रोटी टुकडा मिलेगा। वो भी फिर कल्प-2 के लिये हो जाता है। पिछाडी मे तुमको सब सा0 होगा। पिछाडी मे क्यामत के समय मे सबका हिसाब किताब चुक्तु होता है। फिर तुम देखेंगे कि क्या-2 होता है। फिर बहुत जार-2 रोना पडेगा। बाप समझाते है फिर भी नही सुधरेंगे तो बहुत सजा खानी पडेगी। पिछाडी मे तो सजाओं का भी सा0 होगा। सजा खाकर फिर वापस जावेंगे। क्यामत का समय है नां। बाबा वार्निंग देते है। बहुत खबरदार होकर चलो। जेल बर्डस नही बनो। जेल बर्डस भी यहाँ ही होते है। सतयुग मे तो कोई भी जेल नही होता। फिर भी पढ कर ऊंच पद पाना चाहिये। गफलत नही करो। किनको भी दुःख मत दो। याद की यात्रा पर रहो। याद ही काम मे आवेगी। प्रदर्शनी मे भी मुख्य बात यही बताओ की बाप की याद से ही पावन बनना है। पावन बनना तो सब चाहते है। यह है ही पतित दुनियाँ। भ्रष्टाचारी तो सब है नां। सर्व की सदगति करने एक ही बाप आते है। क्राईस्ट बुद्ध आद कोई की भी सदगति नही कर सकते। फिर ब्रह्मा का भी नाम लेते है। ब्रह्मा को भी सदगति दाता नही कह सकते। फिर देवी देवता धर्म है तो देवी देवता धर्म का निमित है, बल देवी देवता धर्म की स्थापना तो शिव बाबा करते है फिर भी नाम तो है नां2 ब्रह्मा विष्णु शंकर त्रिमूर्ती ब्रह्मा कह देते है। बाप कहते है यह भी गुरू नही है। गुरू तो एक ही है। उनके द्वारा ही तुम ज्ञानी गुरू बनते हो। बाकी वो तो है धर्मस्थापक। धर्मस्थापक को सदगति दाता कैसे कह सकते है। यह बडी डीप बात है समझने की। बन्दर लोग समझते है कि यह गुरू नानक की निन्दा करते है। तुमसे पूछते भी है बोलो गुरू नानक अगर गुरू होता तो वो ही ऐसे क्यो कहते है कि सतगुरू अकाल। तो सतगुरू तो वो है लडे नां। नानक को सिर्फ धर्म स्थापन करते है। जिसके फि= ही पिछाडी सब आ जाते है। वो कोईसवकोले नही जाते है। उनको तो पुनर्जन्म मे आना ही है। जैसे एक के लिये वैसे ही सबके लिये यह समझनी है। एक भी गुरू सदगति के लिये नही है। शंकराचार्य के कितने ढेर नां शिष्य है। आगाखान के कितने करोडो शिष्य है। उनको भी गुरू कह देते है। फिर सदगति करने की उनमे ताकत है? उनको कोई पता थोडेई पडता है। अब बाप समझाते है पतित पावन गुरू एक ही है। वो ही सब की सदगति दाता लिबरेटर है। बताना चाहिये कि हमारा गुरू एक ही है जो सदगति देते है। शान्तिधाम सुख धाम मे ले जाते है। सतयुग मे बहुत थोडे होते है। बाकी कितने ढेर ... तो दिखाई नहीं

भारतवासी ही मानेंगे कि बरोबर यह तो स्वर्ग के मालिक है। स्वर्ग मे उनका राज्य था। बाकी सब आत्मायें फिर कहाँ पर थी? जब कहेंगे निराकारी दुनियाँ मे थी यह भी तुम अभी समझते हो। पहले तो कुछ भी पता नही था। अभी तुम्हारी बुद्धी मे चक्र फिरता रहता है। बरोबर 5000 वर्ष पहले भारत मे इनका राज्य था। जब ज्ञान की प्रारब्ध पुरी होती है तो फिर भक्तिमार्ग शुरू होता है। फिर चाहिये पुरानी दुनियाँ से वैराग। बस अभी तो हम नई दुनियाँ मे जावेंगे। महल बनावेंगे। पुरानी दुनियाँ से दिल उठ जाता है। वहाँ पति बच्चे आद सब ऐसे मिलेंगें। बेहद का बाप हमको विश्व का मालिक बनाते है। इतना ऊंच ख्यालात ऊंच चलन होनी चाहिये। खाना भी बहुत कम। जास्ती हवस नही होनी चाहिये। याद मे रहने वाले का भोजन भी बहुत सूक्ष्म होगा। बहुतो की खाने मे भी बुद्धी चली जाती है। तुम बच्चो को तो खुशी है ही विश्व का मालिक बनने की। कहाँ जाता है खुशी जैसी खुराक नही है। ऐसी ही खुशी सदैव रहे तो खान-पान भी बहुत थोडा हो जावे। बहुत खाने पर भारी हो जाते है। फिर झुटके आद आते है। फिर कहते है बाबा नींद आती है। पाकिस्तान मे सबका खाना मुकर्र था एक रसू बता देते थे कि हम एक हम डेढ रोटी खावेंगे। उस हिसाब ही से रोटी पकाते थे। मांगने की दरकार नही। सब्जी भी रोटी के हिसाब से मिलेगी। ऐसे नही कि अच्छी सब्जी है तो जास्ती खा लेंगे। अभी तो बहुत बच्चे हो गये है तो कन्ट्रोल नही कर सकते है। खाना एकरस होना चाहिये। ऐसे नही कि आज अच्छा भोजन है तो जास्ती खावें। फिर बिमार हो जाते है। बहुत बच्चे कहते है बाबा सुखधाम मे कब चलेंगे? यहाँ हम बहुत तंग है। अरे अपनी तैयारी भी तो करनी है नाँ। अबतक वो योग कहाँ है जो ऊंच पद पा सके। योग की बहुत कमी है। बाप को पढ़ना तो रहता है नाँ। ड्रामा भी कहते है फिर भी पुरुषार्थ कराते रहते है। बच्चो को हमेशा गुण उठाना चाहिये। यहाँ से खुश होकर जाते है। फिर बाहर जाकर बहुत खिटपिट करते है। महारथी थोडे स्वार प्यादे तो है नाँ। सब तो महारथी हो नही सकते। ब्राह्मणी का भी पुरा समाचार दे देना चाहिये। स्टूडेन्टस की कमेटी होनी चाहिये। सब लिखे मिल कर कि बाबा हमको यह ब्राह्मणी नही चाहिये। बाबा फिर मंगवा कर यहाँ पर बिठा लेते है कि यहाँ पर अच्छी रीती बैठ कर खाओ। बाबा जानते है कि दास-दासियाँ भी बननी है नाँ। समझते है कि दासी बनना भी अच्छा हमारी तकदीर ही मे यह है तो हम क्या कर सकते है। अच्छी रीती पढ़ते नही है तो कह देते है कि जो मिलना होगा वोही मिलेगा। ऐसे नही पुरुषार्थ करना है। हाथ उठाते है कि हम तो लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। नर से नारायण बनेंगे। तो फिर सर्विस भी वैसी ही करनी चाहिये नाँ। बाप आकर पढाते है। हर एक की पढाई से जान जाते है कि यह कैसे पढ़ते और पढाते है। पण्डा बन कर आते है फिर बाबा बताते है कि उनको अच्छी रीती उठाया नही है। कोई तो यहाँ आने पर भी उठ जाते है। कि स्कूल मे भी कोई अच्छी कोई तो डल बुद्धी वाले होते है। सर्व की सदगति दाता रक्षा करने वाला सर्व का सतगुरू कौन? अकाल मूर्त। सब धर्मो मे कुछ नाँ कुछ अक्षर अच्छे है। जप साहब सुख मिलेई यह कितने अच्छे अक्षर है। परमपिता परमात्मा स्वर्ग का रचता है। जब सबको ही सुख देने वाला है। कल्प-2 आते है। बच्चे समझ गये है। यह सृष्टी का चक्र 5000 वर्ष का है। शास्त्रो मे तो गपोडे लिख दिये है। मनुष्य अज्ञान अन्धेरे मे है नाँ। भक्ति है अज्ञान। यह भी ड्रामा मे नूँध है। बाप कहते है कि मै भी ड्रामा के बन्धन मे बांधा हुआ हूँ। मेरा पार्ट ही है नई दुनियाँ की स्थापना पुरानी दुनियाँ का विनाश। ऐक्यूरेट समय है। सैकिंड का भी फर्क नही पड सकता है। ड्रामा है नाँ। अच्छा फिर आज तो भोग है। तो आज गुरूवार के दिन सर्व सेन्टर निवासी पदमो अरबो सौभाग्यशाली, सपूत, आज्ञाकारी, फरमान-बरदार सर्विस बुल बच्चो को नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बेहद के रूहानी मात-पिता बाप-दादा का याद प्यार और गुड मार्निंग, नमस्ते बाप विदाई